दोहावली

1. परम पावन गुरु, तेरी हूं दावन गुरु,
आवन जावन गुरु, मेरा ही मिटाइये।
हम हैं अजान गुरु, आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाइये।
तरन तारन गुरु, करन कारन गुरु,
विघ्न टारन गुरु, बिगड़ी बनाइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

2. परम दयाल गुरु, परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु, ज्योति को जगाइये।
सुन्दर सुचाल गुरु, नित ही निहाल गुरु,
अमर अकाल गुरु, यम से बचाइये।
गोबिन्द गोपाल गुरु, प्रभु प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु, बन्धन छुड़ाइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

3. परम उदारी गुरु, परम भण्डारी गुरु,
परम आधारी गुरु, नाम को जपाइये।
पर दुःखहारी गुरु, पर सुखकारी गुरु,
पर उपकारी गुरु, हरि से मिलाइये।
नित अवतारी गुरु, शुभ गुणकारी गुरु,
कर रखवारी गुरु, ताप को जलाइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

4. शाहन के शाह गुरु, सच्चा पातशाह गुरु,
बिन परवाह गुरु, विपत्ति हटाइये।
बे वाहन वाह गुरु, बेराहन राह गुरु,
गुणन आथाह गुरु, मारग बताइये।
दया के दर्याह गुरु, दोषनि के दाह गुरु,
बख्श गुनाह गुरु, मोहि न भुलाइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

5. राजन के राज गुरु, संत सिरताज गुरु,
महा महाराज गुरु, मोहि अपनाइये।
गरीब निवाज गुरु, राखो मेरी लाज गुरु,
पूरे कर काज गुरु, अज्ञान उड़ाइये।
भव जल पाज गुरु, सुखन समाज गुरु,
तारक जहाज गुरु, भव से तराइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

6. ब्रह्म के स्वरुप गुरु, आतम अनूप गुरु,
अमल अरुप गुरु, द्वन्द्व को गलाइये।
अगम अगाध गुरु, अमर अबाध गुरु,
अचल अनाद गुरु, अभेद बनाइये।
देवन के देव गुरु, अलख अभेव गुरु,
अटल अखेव गुरु, स्वरुप लखाइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

7. पूरन सुज्ञानी गुरु ,पूरन सुध्यानी गुरु,
पूरन सुदानी गुरु, प्रेम को पिलाइये।
शरण पालक गुरु, संकट घालक गुरु,
मेरे हो मालिक गुरु, दरस दिखाइये।
करुणा निधान गुरु, सद् महिरबान गुरु,
करले कल्यान गुरु, सुमति सिखाइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

8. निओटन ओट गुरु, काटो भ्रम कोट गुरु,
मेटो जम चोट गुरु, पापनि पलाइये।
वीरनि के वीर गुरु, धीरनि के धीर गुरु,
पीरनि के पीर गुरु, शान्ति में समाइये।
तुम धन धन गुरु, मैं हूं तेरा जन गुरु,
मारे मेरा मन गुरु, दोषनि दलाइये।
कहे टेऊँ सत् गुरु ,राखो मेरी पत गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।।

9. गुरू बिन गति नाहिं, गुरू बिन मति नाहिं,
गुरु बिन सूझत न, सुरति सुज्ञान की।
गुरु बिन सुधि नाहिं ,गुरु बिन बुद्धि नाहिं,
गुरु बिन आवत न विरति विज्ञान की।
गुरु बिन जत नाहिं, गुरु बिन सत नाहिं,
गुरु बिन लागत न निरति सु ध्यान की।
गुरु बिन नीति नाहिं ,गुरु बिन रीति नाहिं,
कहे टेऊँ होत नहिं प्रीति भगवान की।।

10. गुरु है सागर सम ,रतन हे ज्ञान तांमें,
जोई सेवे सोई □ावे रतन विज्ञान को।
गुरु है मलाह सम, नाम नाव चाढ़ कर,
□ार □हुँचाय देत मोक्ष के स्थान को।
वैद्य के समान गुरु नाम की दवाई देके,
द्वन्द्व रोग दूर कर करत कल्यान को।
कहे टेऊँ रवि गुरु वचन किरण जांके,
ज्ञान का प्रकाश कर हरत अज्ञान को।।

11. गुरु शशि सूर्य सम हरत तपत तम,
गंगा के समान गुरु पावन करत है।
गुरु अज देत गुन गुरु हरि रक्षा करे,
शंकर समान गुरु संशय हरत है।
बादल समान गुरु वरषा वचन कर,
शिष्य का हृदय नित गुणों से भरत है।
कहे टेऊँ गुरु सेव कर निज पाओ भेव,
गुरु के प्रसाद सब कारज सरत है।।

12. गुरु देव माहिं जन धार सत्य भाव मन,
द□ष दृष्टि सब हन गुण शुभ गहिये।
रज□ गुण विधि दीस सत्त□ गुण माहिं ईस,
तम हर धर सीस भार शेष सहिये।
शीत चन्द्र तेज सूर शील राम काल चूर,
बाण ले पार्थ सूर राज इन्द्र कहिये।
विघ्न हर गणपति दुष्ट दले राधापति,
विज्ञानी वसिष्ठ अति कहे टेऊँ लहिये।।

13. स्वर्ग सीस वायू प्रान रवि शशि नैन जान,
दशों दिश जाके कान मुख शिखी मानिये।
चरन □ाताल इन्द्र हाथ निस दिन नाक,
दान्त काल धड़ नभ □ट सून जानिये।
सिन्धु मूत्र नदी नाड़ी बन राम गिरि हाड़,
तारे तत मेघ गुण बुध्दि बीज गानिये।
कहे टेउँ जाइ कर श्री गुरुदेव वर,
जाके □ि□ण□ माही□ब्रह्माण□ ही बखानिए।।

14. काई कहे □ूज हर हरि देवी विधि सुर,
गङ्गा आदि तीर्थ चर गणेश गनाय□ है।
नृसिंह बावन राम सूर शशि शेष श्याम,
सुरधैन शालिग्राम सुरेश सुनाय□ है।
अगनी □वन □ानी शारदा निगम बानी,
बृहस्□ति बल दानी धनेश जनाय□ है।
कहे टेऊँ ऐसी बात सुन मन भरमात,
गुरुदेव देके दात आतम लखाय□ है।।

15. दीनानाथ दीनबन्धु दया के अथाह सिन्धु,
शीतल स्वरुप इन्दु तपत निवारे है।
दूख हर सूख सर शील घर धीर धर,
नीतचर दुष्ट जर धर्म ध्वजा धारे है।
ब्रह्मवेता ब्रह्मज्ञानी बोलत सु ब्रह्मबानी,
ब्रह्मज्ञान के सु दानी भजन भण्डारे है।
कहे टेऊँ कर जोर मेरे गुरु शिरमोर,
मोह के बन्धन तोड़ जनम सुधारे है।।

16. देवन का देव गुरु पशु से मानुष कर,
मानुष ते करे सुर कुनीर ज्यों गङ्गा है।
नीम को चन्दन तर सूली से कण्टक कर,
अन्ध देवे नैन वर देखे सर्व रङ्गा है।
काक ही सों हङ्स होय कीट ही से भृँग जोय,
लोहे सों कञ्चन लोय पलटाय अङ्गा है।
कहे टेऊँ जागे पुन गहे गुरु का वचन,
भया जड़ से चेतन ऐसा गुरु सङ्गा है।।

17. सत् गुरु सुरतरु पूरन सु काम कर,
चन्दन पारस सर पलटाय अंग है।
दिनकर के समान अविद्या तिमिर हान,
जौहरी परख जान पाप हत गंग है।
मात तात भ्रात मीत शिष्यन को पाले नीत,
गोरख ज्यों गाय गीत तोड़े मोह संग है।
कहे टेऊँ गुरुवर रजक समान तर,
पापन की मैल हर लावे राम रगं है।।

18. गुरु के वचन सुन □या निरभ्रान्त मन,
जीव ब्रह्मरुप □या ध्यान धुनि लायके।
देखी यह विश्व सारी रज्जु □ीच सांप सम,
□ागा भ्रम देखा ज्ञान दीपक जगायके।
गुरु के सु ज्ञान कर छेदी ग्रन्थि चिद जड़,
आतम साक्षात कीना पड़दा उठायके।
सत् गुरु पै वार वार जाऊँ □लि □लिहार,
कहे टेऊँ मुक्ति कीना वचन सुनायके।।

19. जैसे रति अलि फूल सांप बीन सुन झूल,
योगी जन कंद मूल मारवाड़ बन को।
सीप पपीहा चकोर बूंद चन्द्र संझ भोर,
थाके नर नींद घोर सत्यवादी पन को।
मोर रति घन बीच दादर सनेह कीच,
रोगी दवा दुखी मीच मृग चहे बन को।
कहे टेऊँ भूखे अन्न बछड़े सुरही थन,
तैसे चाहे मेरा मन गुरु दर्शन को।।

20. जैसे प्रीति जल मीन मधुरिख मधुलीन,
अलि कञ्ज मृग बीन चन्द से चकोर है।
अनल पंछी आकास पतंग देख प्रकाश,
गऊ बछड़े के पास बादल से मोर है।
चन्दन सरप पुन चातक स्वांति घन,
चकवी को पति मन रैन रति चोर है।
कहे टेऊँ निशदिन योगी योग चाहे मन,
तैसे गुरु दर्शन प्यास संझ भोर है।।

21. जैसे रति घन मोर हंस सर रैन चोर,
सूर तेग कोक भोर कंगाल को दाम है।
मृग नाद मीन नीर शुनी मांस नाग खीर,
युवति भूषण चीर कामी नर वाम है।
कोकल को आम प्रेम विप्र व्रत नेमी नेम,
□तनी खशम क्षेम संतनि को राम है।
कहे टेऊँ हरिजन सी□ स्वांति मूंढ तन,
तैसे मोहि निशदिन प्यारो गुरु नाम है।।